पुस्तक– नागार्जुन

पद्य

संस्कृति की भट्ठी में कच्चा गोश्त रहे थे भून।
छाँट रहे थे अब तक बस वे बड़े–बड़े कानून।
नहीं किसी को दिखता था दूधिया वस्त्र पर खून।
अब तक छिपे हुए थे उनके दाँत और नाखून।
संस्कृति की भट्ठी में कच्चा गोश्त रहे थे भून।
तन मन अर्पित किए हुए थे, खुश था अंकिल साम।
क्षुधा–अशिक्षा–रोग–रूढ़ि सबका मिलता था दाम।
बाहर–बाहर नेहरू तक को करते थे प्रणाम।
भुना रहे थे बेदर्दी से बापू जी के नाम।
तन मन अर्पित किए हुए थे, खुश था अंकिल साम।

****

नाटक – माधवी

गद्य

कथावाचक : शास्त्रों में कहा है कि जिस राजा को पुत्र–लाभ नहीं होता, वह राजा रंक समान है। वह राजा अपना इहलोक और परलोक दोनों खो बैठता है। वंश को आगे ले जाने वाला, सत्ता और सम्पत्ति का उत्तराधिकारी, पितरों की आराधना करने वाला, बाप–दादा के यश को और अधिक उज्ज्वल बनाने वाला, पुत्र ही है। देवियों और भद्रपुरूषों, उसी पर घर की, परिवार की, समाज की, राज्य की गाड़ी चलती है। इसीलिए शास्त्रों में कहा है कि जिसके पुत्र नहीं, वह राजा रंक समान है।

अयोध्या को छोड़, गालव और माधवी, चलते–चलाते काशी में पहुँचे। गंगाजी के तट पर बसी, देवों की नगरी काशी के सिंहासन पर महाराज दिवोदास विराजमान थे। प्रजा उन्हें रसिक राजा दिवोदास कहकर पुकारती थी क्योंकि वह बड़े कलाप्रेमी राजा थे, सारा समय रास–रंग में लीन रहते। सोने की शय्या पर सोते हुए भी राजा दिवोदास पुत्र के लिए लालायित रहते थे। उनके रनिवास में पैंतीस रानियाँ थीं पर पुत्र–लाभ एक से भी नहीं हुआ था। जैसे भौंरा फूलों पर मुग्ध होता है, वैसे ही वह स्त्री के प्रति आसक्त होते थे। माधवी को देखते ही उस पर मुग्ध हो गये।

उर्दू

ख़ैरसल्ला : वाह रे किसमत, बरसों कटी–कटी भागी कतरायी मगर आख़िरकार यारों के अड़ंगे में आई बल्के शम्सा ने नवाब क़त्लू खां को बुलाया और अपने भाई बरजिस को उसके हाथ से क़त्ल कराया तो माबदौलत ने भी उनका हाथ बटाया जिसके सिले में एडीकांग का ओहदा पाया। इस काम में थोड़ी सी बेईमानी तो ज़रूर करनी पड़ी मगर तकदीर खुल गई। अमां कहां का दीन और ईमानदारी। ये तो लोगों के डराने के लिए यारों ने ढकोसला बना रखा है। वरना ईमानदारी में क्या रखा है। अरे सैफू अरे सैफू।

स्त्री हेतु

पुस्तक– नागार्जुन

पद्य

झूठा घमंड ! फ़िजूल का घमंड !

डाल दिया बादलों ने

नदी के अन्दर जीवन चुपचाप एक रात !

डूब गए दियारे छोटे–मोटे

टूट गई हदें, टूट गए बाँध !

फिर से हो गया चालू पानी का प्रवाह

किरानों के बीच से होकर

फिर से लगीं नाचने लहरें

फिर से लगे मचलने झाग

फिर से फैल गई खुशख़बरी इर्द–गिर्द

फिर से शुरू हुआ लोगों का आना–जाना

फिर से आने लगे पखेरू

कछारों में दीख पड़ी फिर से

वन्य जंतुओं के पैरों की छाप

छेड़खानी करने लगी नदी फिर उनसे !

फिर से लगी उछालने वह छोटी–छोटी

मछलियाँ

फिर से जगमगा उठे चाँदी के झमके

लहरिया मेहराब पर !

****

नाटक–माधवी

गद्य

माधवी : हाँ, स्वतन्त्र भी। तुम पूर्णतः स्वतन्त्र हो गालव, मैं तुम्हें बाँधकर नहीं रखूंगी। वे दिन भूल गये जब तुम कहा करते थे कि तुम महलों के आसपास मँडराते रहे हो ताकि तुम्हें मेरी छाया ही नज़र आ जाये। मैं वही माधवी हूँ, गालव । तुम किस माधवी के लिए छटपटाते रहते थे ? मैं तुम्हारे लिए केवल निमित्त मात्र थी। जब तुम मेरे सामने अनुनय–विनय कर रहे थे तब भी तुम झूठ बोल रहे थे। तुमने केवल एक ही व्यक्ति से प्रेम किया है और वह अपने आपसे। पर मैं, तुम्हें पहचानते हुए भी नहीं पहचान पायी। मैं सारा वक्त यही समझती रही कि गालव सच्ची साधना और निष्ठावाला व्यक्ति है। तुम भी गुरूजनों जैसे ही निकले, गालव.....।

आग़ा हश्र काश्मीरी के चुनिंदा ड्रामे–1

उर्दू

मेहर : मगर वो ज़िन्दगी कितनी है। जिसकी हवस इतनी है ! ज़िन्दगी हवा का झोंका है और पानी का बुलबुला, आंख की झपक। बिजली की चमक, सोते का ख़्वाब है। जब आंख खोल के अपने को क़ब्र में पाएगा। जिस तरह रात का नशा दिन को दुख देता है। उसी तरह आंख खुलने पर पछताएगा।

ज़िन्दगी मिस्ले शजर है जो हरा है कुछ बरस।

गिर पड़ेगा कट के आख़िर क्योंकि आंधी है नफ़स[2]।

ये सर नापाक किया है। एक हड्डी का क़फ़स[3]।

आ फंसा है इसी में दो दिन के लिए मुर्ग़े हवस[4]।

मौत का सय्याद[5] अजब आएगा शौक़ जब्र में।

चिड़िया उड़ जाएगी पिंजरा फैंक देगा क़ब्र में।